उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इण्टरमीडिएट परीक्षा "अ"
(उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्य	हस्ताक्षर

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या–	$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–				

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक–

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या–

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या

1. एवं संख्या.....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या..

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)

योग (अंकों में)

प्रश्न (01) का उत्तर

हिन्दी ------------------------------ कबीर ही थे

उत्तर क्रमाँक - 1 (क)

कबीर मे जीवन की प्रधान समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित हो, यह प्रेरणा मिलती है इसके अलावा तुलसी में अपने आदर्श के कारण शक्ति बल और उत्साह मिलता है। कबीर के चिन्तन से जो हमें चेतना मिलती है वह सत्य की साधना से है।

कबीर सत्य के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति करना चाहते है जबकि तुलसी राम के भक्त है।

03

उत्तर क्रमाँक - 1 (ख)

कबीर से प्रेरण मिलती है कि जीवन की प्रधान समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित हो, इस भाव के कारण **कबीर अद्वितीय है।** इसी सार्वजनीन भावना के कारण वे जनता मे **विशेष लोकप्रियता** प्राप्त कर सके है।

इनका ये अद्वियनन इनके श्लोको में भी उजागर होता है।

03

कबीर की मूल प्रेरणा → जीवन की समस्याओ पर मौलिक रूप से विचार करना

उत्तर - 1(ग)

कबीर के काव्य मूल का यह विशेषता है कि कबीर की रचनायें सत्य प्रेरणा से ओत प्रोत है न कि काव्य सौन्दर्य से। रसग्राहियों एवं कला पिपासुओं ने कबीर का विशेष सम्मान कभी नहीं किया।

कबीर के लिखे श्लोकों एवं अन्य प्रकार के दोहों से इस तथ्य को सार्थकता मिलती है।

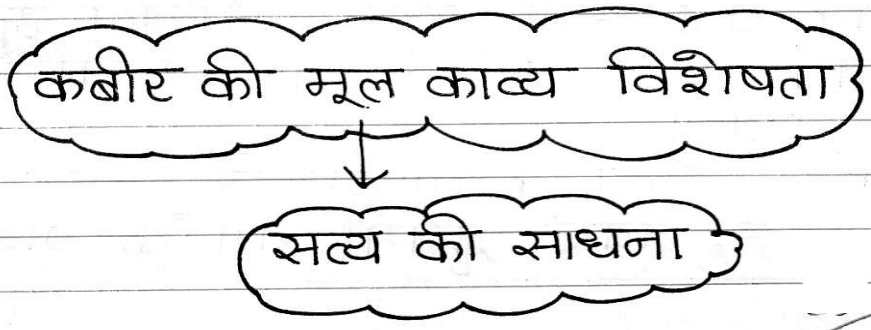

उत्तर - 1(घ)

रामानुज भक्ति के क्षेत्र में तो समानता के समर्थक थे, परन्तु भक्ति के क्षेत्र से बाहर रामानुज सामाजिक भेद को मानते थे। परंतु कबीर इसके ठीक विपरीत थे। कबीर के अनुसार "हम सब ईश्वर की सन्तान है, मनुष्य मात्र समान है, जाति और धर्म का कोई भेद नहीं है।"

उत्तर - 1 (ड़)

उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक :—

" हिन्दी साहित्य और हमारा समाज "

(चूँकि इस गद्यांश में हिन्दी साहित्य एवं समाज की कुछ रीतियों का वर्णन किया गया है।)

प्रश्न (02) का उत्तर

निबंध : राष्ट्र निर्माण एवं नागरिक दायित्व

प्रस्तावना :— वर्तमान में विश्व का प्रत्येक राष्ट्र अर्थात देश अपने राष्ट्र को **एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहता है।** देश का प्रत्येक नागरिक इस कार्य में अपना संपूर्ण योगदान देता है। राष्ट्र निर्माण आज के प्रत्येक देश की एक आशा है, एक लक्ष्य है।

राष्ट्र निर्माण :— एक राष्ट्र को आगे बढ़ाने के सबसे जरूरी कार्य है। राष्ट्र निर्माण। इसके लिये इसका अर्थ जानना आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण का अर्थ है राष्ट्र को विकास के मार्ग

पर ले जाना। राष्ट्र को विकासशील देश से एक विकसित राष्ट्र का निर्माण करना। एक देश यही चाहता है कि वो विश्व का सबसे ताकतवर देश बने। ऐसी ही एक सपना भारतवासियों का भी है कि भारत विश्वगुरू बने।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका:—

राष्ट्र निर्माण में सबसे अहम भूमिका होती है देश के युवा की।

> "आज का युवा कल का नागरिक होगा।"

देश में सबसे ज्यादा ऊर्जावान, उत्साही, धैर्यशील एवं जिज्ञासु होता है, देश का युवा। एक ऐसी अवस्था जिसमें अपने देश के लिये बहुत कुछ किया जा सकता है। देश का युवा शिक्षित हो, स्वस्थ हो, उत्तम विचार धारा वाला हो तो, देश खुद-ब-खुद आगे बढ़ेगा।

> "साधक हो तुम देश के, देश की उड़ान हो,
> आशा हो तुम भारत माँ की,
> तुम्हीं हिन्दुस्तान हो।"

राष्ट्र निर्माण में सबसे अच्छी भागीदारी युवाओं की ही होती है, चाहे पुरुष हो या चाहे नारी हो, राष्ट्र निर्माण के लिये ये देश की रीढ़ है।

राष्ट्र निर्माण में नागरिकों का दायित्व :—

प्रत्येक देशभक्त नागरिक को राष्ट्रनिर्माण के लिये अपनी तरह से पूरा यथोचित योगदान देना चाहिये। चाहे बच्चा हो, महिला हो, पुरुष हो या बुजुर्ग हो, देश निर्माण में सभी अपना पूर्ण सहयोग दे सकते हैं। जैसे अपना कार्य पूर्ण लगन से करना, समय का पाबंध होना, अपने आस पास स्वच्छता रखना, सबका साथ सबका विकास का हिस्सा बनना। देश की नई योजनाओं से जुड़कर अपने स्तर को मदद देना। हम कुछ उदाहरण देख सकते है- स्वामी विवेकानंद सुभाष चन्द्र बोस, इंदिरा गाँधी या फिर नयी पीढ़ी के नरेन्द्र मोदी जी, विराट कोहली इत्यादि। इनसे प्रेरणा ले सके। अपना लक्ष्य निर्धारित करे :-

"उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य तक न पहुच जाओ।"

↳ स्वामी विवेकानंद

उपसंहार :—

राष्ट्र निर्माण के लिये हमें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अहम भूमिका निभानी चाहिये। हमारा राष्ट्र विश्व का नेतृत्व करे व सबसे आगे बढ़, यह लक्ष्य होना चाहिये।

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहि
वह हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का
प्यार नहीं"।

इसी भावना को साथ लेते हुये हमें "राष्ट्र निर्माण एवं नागरिक दायित्व" में अपन पूर्ण योगदान देना चाहिये।

उत्तर - (3)(क)

इण्टरनेट

उत्तर - 3 (ख)

सम्पादकीय

उत्तर - 3 (ग)

इण्डिया टुडे

उत्तर - 3 (घ)

समाचार	फीचर
• इसका उद्देश्य लोगों तक तथ्यात्मक जानकारी एवं सूचनायें पहुचाना है।	इसका उद्देश्य लोगों तक तथ्यात्मक जानकारी पहुँचाने के साथ साथ लोगों का मनोरंजन करना है।

• यह उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।	यह उल्टा पिरामिड शैली में नहीं लिखा जाता है।
• इसकी निश्चित शब्द सीमा होती है।	इसकी शब्द सीमा 250 से 2000 शब्द तक हो सकती है।

उत्तर - 3 (ङ)

समाचार लेखन के कोई दो ककार → क्या, कौन

उत्तर क्रमांक (04)

युवा भारत

भारत वर्तमान में एक विकासशील देश है। इसको विकसित देश बनाने के लिये सबसे अधिक योगदान देश के युवाओं अर्थात् युवा भारत का होगा। देश को आगे बढ़ाने के लिये एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा। कोई भी कार्य यदि हम करते है तो उसमें दो चीजें आती है — परिश्रम या मजदूरी।

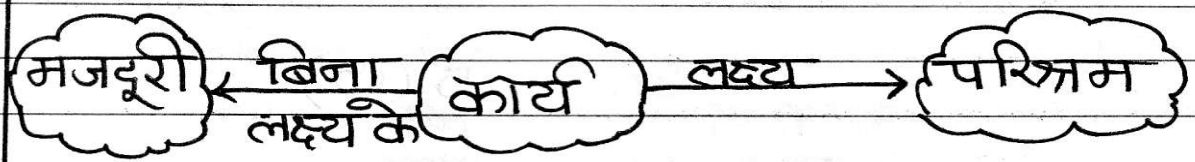

यदि हम कोई कार्य लक्ष्य के साथ करते है, तो

उसे परिश्रम कहते है और यदि हम कोई कार्य बिना लक्ष्य के करे तो उसे मजदूरी कहते है। अतः एक युवा राष्ट्र के नागरिक होने के कारण हमें अपना कार्य एक लक्ष्य के साथ करना चाहिये। हमें अपने बड़ो से प्रेरणा लेनी चाहिये।

यदि प्रेरणास्रोत की बात एक युवा के लिये की जाय तो सबसे महान प्रेरणास्रोत है, "स्वामी विवेकानंद जी"।

अपनी अल्पआयु में ही इन्होंने इतिहास के पन्नों में प्रवेश कर लिये। इसलिये हम सभी "12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में मनाते है।

"आज का युवा ही कल का भविष्य है।"

इस राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिये सभी को अपना सहयोग देना चाहिये।

" युवा भारत,
सशक्त भारत।"

प्रश्न - 5 का उत्तर

मैं स्नेह सुरा — — — — — — — करता हूँ।

उत्तर - 5 (क)

" स्नेह सुरा" का पान का पान करने से

कवि हरिवंशराय बच्चन जी कहना चाहते है कि उन्हें "प्रेम की मादकता का उपभोग करना अच्छा लगता है।" यह उन्होंने सुरा को प्रेम रूपी मदिरा के लिये प्रयोग किया है।

उत्तर - 5 (ख)

"जग का ध्यान" न करने से कवि का आशय यह है कि वे तो संसार का अच्छा, चाहते है, संसार का कल्याण करना चाहते है अतः उनसे कोई लोग कुछ भी कहें, हंसे या ताना मारे उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, वे तो बस संसार का भला ही चाहते है।

उत्तर - 5 (ग)

जग अर्थात् जन साधारण एवं कवि की मूल भावना में एक बड़ा अन्तर है। संसार के लोग केवल उन्हे ही पूछते है जो सांसारिक भोगों एवं सुख सुविधाओं में लिप्त रहते है और संसार की परम्पराओं का पालन करते है जबकि कवि इन सुख सुविधाओं में लिप्तन होकर परम परमात्मा की खोज में लगे है एवं संसार का कल्याण चाहते है।

प्रश्न (06) का उत्तर

कृ.पृ.प.

तिरती है समीर — — — — — — — — — के बादल।

उत्तर - 6 (क)

भाव सौन्दर्य:—

इसमे कवि सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" अपनी कविता "बादल राग" मे कह रहे है कि जब समुद्र के ऊपर वायु आती तो मानो अस्थिर सुख पर दुख की छाया आ गई हो।

जो नीचे वर्ग के लोग है (किसान वर्ग या मजदूरवर्ग) उनके जलते हुये हृदय पर बादल आकर अपनी बौछार करेगे और उनकी जलन को कम करेगे। वे कहते है, हे बादल! तेरी तेज गर्जन से दबे हुये नीचे वर्ग के लोगो आकांक्षाओ से भर गये है और प्रसन्न हो रहे है। क्योंकि इन बादलो की गर्जना उनके लिये प्रसन्नता देनी वाली है।

अब वे अपना सर उठाकर आशा के साथ देख रहे है कि अब बादल आयेगे और उनकी फसल अच्छी होगी।

वे पूरी आशाओं से बादलो को बुला रहे है।

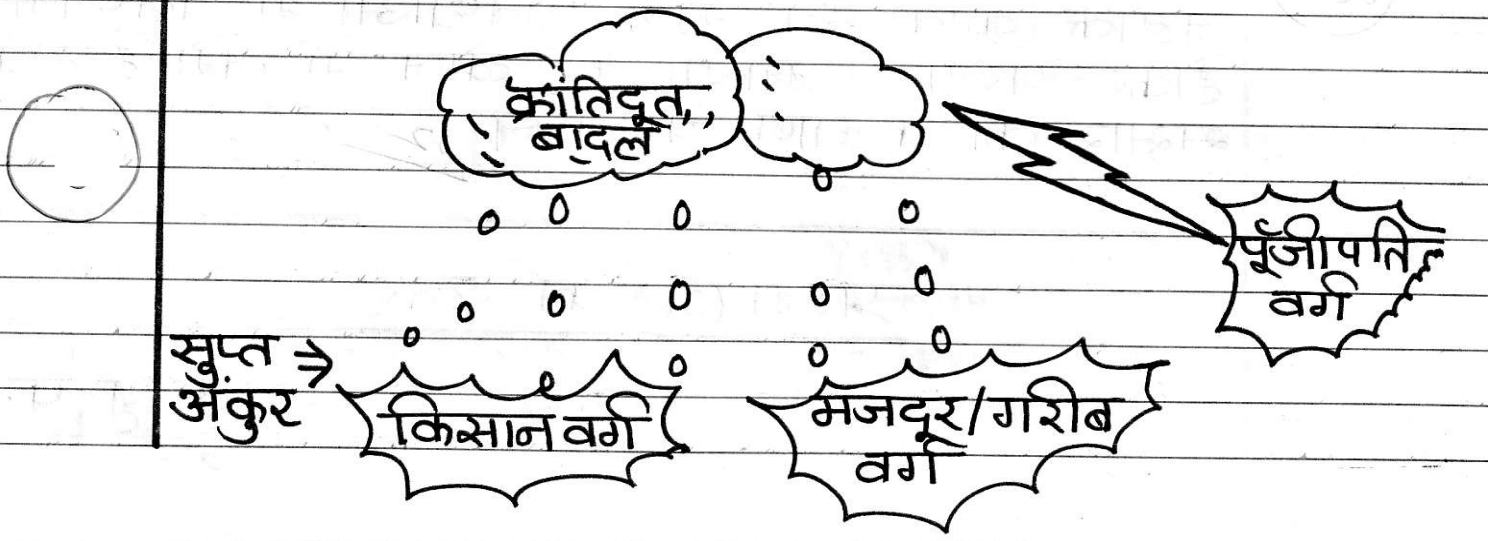

प्रश्न 7 - (क) का उत्तर

कुँवर ~~नामास~~ नारायण जी द्वारा लिखी कविता "कविता के बहाने" में उन्हें कविता की तुलना चिड़िया फूल एवं बच्चे से की गई है। इसमें उन्होंने कहा है कि चिड़ियों की उड़ान एवं फूलों की सुगंध क्रमशः सीमित है, एक निश्चित समय के बाद समाप्त हो जायेंगी, परंतु कविता की उड़ान एवं सुगंध कभी समाप्त नहीं होती एवं वर्षों वर्षों तक लोगों को आनन्दित करती है।

कविता की तुलना बच्चों के खेल से कर उन्होंने कविता को बच्चों के खेल के समकक्ष पाया है। जिस प्रकार बच्चा बिना भेदभाव के सभी को अपने खेल में सम्मिलित कर लेता है उसी प्रकार कविता भी।

उत्तर - 7 (ग)

"उमाशंकर जोशी" जी ने अपनी कविता "छोटा मेरा खेत" में छोटे खेत को कागज के पन्ने के समान बताया है, जिस प्रकार खेत में बीज बोकर, वे अंकुरित हो जाते है व फसल मिलती है उसी प्रकार कविता नामक कृति भी तभी प्राप्त होती है जब विचार रूपी बीच से शब्द रूपी अंकुर फूटते है।

छोटा मेरा खेत चौकोना, कागज का एक पन्ना
कोई अंधड़ वहाँ से आया, क्षण का बीज बो गया।

उत्तर – 6 (ख)

बादलों के आगमन से समुद्रों के ऊपर हवाएँ बहने लगती है, तेज गर्जना की आवाज आने लगती है, वर्षा की संभावना रहती है और सुप्त अंकुरों के समान किसान व मजदूर वर्ग ऊपर की ओर आने लगते है। इस प्रकार के परिवर्तन बादलों के आगमन से होते है।

उत्तर – 8 (i)

सेवक धर्म – – – – – – – – – – हो उठी।

उत्तर – 8 (क)

भक्तिन को सेवक धर्म में हनुमान जी को स्पर्धा करने वाली कहने में लेखिका का यह निहितार्थ है कि भक्तिन लेखिका की भक्ति अर्थात् उनकी सेवा करने में कोई कसर नही छोड़ती है वे भक्तिन की सेवा और उनके प्रति अगाध प्रेम को पहचानती है।

उत्तर – 8 (ख)

भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात था लेकिन यह नाम उसके लिये विरोधाभासक की तरह था क्योंकि लक्ष्मी का अर्थ है धन सम्पत्ति की मालकिन बल्कि यह नाम उस पर ठीक नही बैठता था। अतः वे कवित्वहीन नाम पाकर वह गद-गद हो उठी। उसे लछमिन नाम शोभा न देता था।

उत्तर - 8 (ग)

भक्तिन का नाम वास्तव में लक्ष्मिन था अर्थात् विष्णु की पत्नी एवं धन-ऐश्वर्य से परिपूर्ण परन्तु भक्तिन एक गरीब महिला थी और नौकरी की तलाश में आई हुई थी अतः लेखक के अनुसार यह नाम का विरोधाभास था।

उत्तर - 9 (क)

श्रीमान "जैनेन्द्र कुमार जी" ने अपने निबंध "बाजार दर्शन" में विज्ञापन एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के बारे में बताया है।

बाजारूपन का तात्पर्य है - बाजार का जादू चढ़ जाना। बाजारूपन शब्द का प्रयोग तब करते हैं जब बाजार में ग्राहक एवं विक्रेता के बीच संबंध केवल व्यवहारित एवं व्यापारित ही हो। इसमें बस ग्राहक समान खरीदेगा और विक्रेता बेचेगा इसके अतिरिक्त इनके बीच कोई संबंधन हो।

बाजार को सार्थकता केवल वही व्यक्ति दे सकता है जिस पर बाजार का जादू न चढ़े और जो बाजार जाने से पहले ये सोचकर जाये कि उसे क्या लेना है क्या नहीं।

यदि खाली मन और भरी जेब के साथ बाजार जायेंगे तो सार्थकता नहीं दे पायेगा।

इस पाठ में भगत जी बाजार को सार्थकता देते हैं।

उत्तर- 9 (ग)

"डॉ भीम राव अंबेडकर" ने अपने पाठ "जाति प्रथा एवं श्रम विभाजन" में जाति प्रथा के दोषों का वर्णन किया है।

वे कहते है कि जाति के आधार पर श्रम का विभाजन एकदम अनुचित है। किसी व्यक्ति के जन्म लेने से पूर्व ही यदि उसके द्वारा करने वाले कार्य का निर्धारण उसकी जाति के आधार पर कर लिया जाय तो यह पूरी तरह अनुचित है। जिस क्षेत्र में व्यक्ति की रुचि ही नहीं है उस क्षेत्र में व्यक्ति को जबरदस्ती नहीं डाला जा सकता है।

इस प्रकार से तो उस व्यक्ति की अपनी कोई भूमिका ही नहीं रह जायेगी और वह इसी प्रकार से जाति प्रथा के जंजाल में फसा रह जायेगा।

अतः अंबेडकर जी के अनुसार जाति प्रथा के आधार पर श्रम का विभाजन नहीं होना चाहिये।

उत्तर- 10 (ख)

"आनन्द यादव" द्वारा लिखी गई कहानी "जूझ" में कथानायक की निम्न विशेषताये है:—

i) परिश्रमी:— कथानायक एक परिश्रमी बालक है। वे स्कूल भी जाते है और खेतों में भी काम करते है। वे किसी भी क्षण खाली नहीं

बैठते है। खाली समय होने पर कवितायें लिख लेते है।

ii) **लगनशील:—** कथानायक लगनशील है, वे अपनी लगन के कारण ही अपनी माता एवं दत्ताजी राव से कहकर अपना स्कूल में प्रवेश कराते है।

iii) **जिज्ञासु:—** वे जिज्ञासु प्रवृति के भी है। अपने मराठी अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर से मराठी कवितायें बनाने के प्रेरणा लेते है व स्वयं भी कवितायें लिखने लगते है।

उत्तर – (10) (ग)

“सिन्धु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा अनुशासित ~~थी~~ सभ्यता थी।”

सिन्धु सभ्यता में खुदाई के दौरान वहाँ एक सूती ~~कपड़ी~~ कपड़ा, बीज एवं कई प्रकार की चीजें मिली जो आज संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे है परन्तु वहाँ खुदाई में किसी भी प्रकार के हथियार या बड़े औजार नहीं मिले। वहाँ मिले भी तो बहुत छोटे। वहाँ न तो भव्य राजप्रसाद के घर थे न तो कोई समाधियाँ थी और न ही कोई विशेष विशाल भवन जिससे कुछ अलग प्रकार से अनुमान लगाया जा सके।

अत: सिंधु सभ्यता एक सुशासित सभ्यता रही होगी।

उत्तर क्रमाँक (11)

मुअनजो-दड़ो की नगर योजना बड़ी मनोमुग्ध कारी थी। यह कहना उचित भी है:—

मुअनजो-दड़ो को लगभग 5000 वर्ष पुरानी सभ्यता माना जाता है। (क्षेत्रफल = 200 hectare व जनसंख्या = ~5000) इसे निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है:—

- वहाँ की सड़के या तो एकदम सीधी थी या फिर आड़ी थी।
- वहाँ मकानों को कच्ची पक्की ईंटों के ऊपर बनाया गया था, जिससे सिंधु नदी के पानी के बहाव से बचा जा सके।
- वहाँ मुख्य सड़क का कोई भी घर सुसड़क की ओर नहीं खुलता था। किसी भी घर में प्रवेश करने के लिये पहले सेक्टरों में प्रवेश करना पड़ता था।
- प्रत्येक घर में एक अलग स्नानाघर था।
- स्नान घर के जल निकासी के लिये उत्तम व्यवस्था थी।
- इसे "मैदान की संस्कृति" एवं "जल संस्कृति" भी कहा गया।
- सभी घर लगभग एक ही आकार के थे।
- सभी नालियाँ ढकी हुई थी।
- इ शहर में लगभग 700 कुएँ स थे जो कि सार्वजनिक थे।
- सभी लोगों के लिये एक महाकुंड था जहाँ छोटे-छोटे कमरे थे। शायद वे धर्मशालाएँ रही होंगी। इसे "कॉलेज आफ प्रीस्ट्स" कहा गया।
- यह एक स्थान पर अधूरी सीढ़ियाँ दिखाई गई

जो हमे इतिहास के पार ले जाती है।
> यहाँ जलनिकासी की बहुत ही अच्छी व्यवस्था है।

उत्तर - 12

एकदा - - - - - - - - - - - - करिष्यामि।

उत्तर-12 (क) अनुजः स्वादु मांसम आनीतवान्।

उत्तर-12 (ग) अग्रजः उदरे महान्तं तापम् अनुभूतवान।

उत्तर - 12 (घ) अग्रजः अनुजं अवदत - "भ्रातः! इतः परम् अहं कदापि मांसभक्षणम् न करिष्यामि"।

उत्तर -(13)

ऊष्मतो - - - - - - - - - - - विद्यते।

उत्तर - 13 (क)(ख) ऊष्मतो त्वक, फलं, पुष्पम् च वर्णं म्लायते।

उत्तर - (13)(क) ऊष्मतो वर्णं म्लायते।

उत्तर क्रमाँक (14)

उत्तर (14)(क) नीचैः विघ्नभयेन कार्यं न प्रारभ्यते।

उत्तर (14)(ख)(ग) रूपम्तामे सहदरौ निवसतः स्म।

उत्तर (14) (घ) अनुजः गृहपोषणं करोति स्म।

उत्तर (14) (च) गोविन्द वल्लभ पन्तः संयुक्त प्रान्तस्य मुख्यमंत्री अभवत्।

उत्तर (14)(छ) वल्ली वृक्षं वेष्टयति।

उत्तर क्रमाँक (15)

1) दवाति :- सः पुस्तकं ददाति।

~~२) हिमालयात् :- हिमालयात् गंगा: प्रवहति।~~

2) फलम् :- रामः फलम् खादति।

3) तीव्रम् :- सः तीव्रम् लिखति।

~~२) प्रवहति :- गंगा सलीलं - सली~~

अगले पृष्ठ पर →

4) **प्रवहति:-** गंगा मंदं- मंदम् प्रवहति।

उत्तर क्रमाँक (18)

श्लोक :-

हे। जिह्वे कटुकस्नेहे मधुरं किं न भाषसे।
मधुरम् वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरप्रियः।।

चा० नी० 3/132

हिन्दी अनुवाद:-

हे। जिह्वा तुम कटु वचन क्यों बोलती हो, तुम मधुर वचन बोलो, इस संसार को तो मधुरता ही प्रिय है।

अर्थात् हे। जीभ तुम कटु वचनों को स्नेह करने वाली हो तुम मधुर (मीठे) वचन क्यों नहीं बोलती है। हे। कल्याण करने वाली जीभ तुम मधुर एवं मीठे वचन बोलो क्योंकि यह संसार कटु वचन बोलने वालों का आदर नहीं करता है। इस संसार के लोगों को तो मधुर वचन ही प्रिय है।

{यह श्लोक चाणक्य नीति, नीतिशतकम से उद्धृत है।}

अनुक्रमाँक =